Election Commission of India

NAME OF THE NEWSPAPER नवभारत टाइम्स DATE: 11 OCT 2012

रीडर्स मेल

वोट बैंक का चक्कर

'दलित और दलित राजनीति' शीर्षक से 10 अक्टूबर को प्रकाशित संपादकीय ने आज की राजनीति का सच उजागर किया है। कोई भी राजनीतिक पार्टी नहीं चाहती कि उसके वोट बैंक में सेंध लगे।

एकमुश्त वोट पाने की तमन्ना तभी पूरी होती है, जब वह वर्ग पिछड़ा और कमजोर बना रहे ताकि उसे मनमाफिक हांका जा सके। दलित राजनीति के साथ भी यही हो रहा है। कांग्रेस से लेकर दलितों की चिंता में दुबली होने का दावा करने वाली मायावती की पार्टी बीएसपी तक ने दलितों के लिए कुछ खास नहीं किया है। 2007 के विधानसभा चुनावों में जनता ने मायावती को पूर्ण बहुमत देकर जिताया था। इससे उम्मीद बंधी थी कि दलितों की हालत में सुधार होगा जो दूसरे राज्यों के लिए प्रेरणा का काम करेगा और दलित राजनीति वोट बैंक के दायरे से बाहर निकलेगी लेकिन मायावती दलित ब्राह्मण ही साबित हुईं। इसी का नतीजा रहा कि महिला और दलित मुख्यमंत्री होने के बावजूद उनके शासन के दौरान दलितों की समाज में हैसियत